सन्तानार्थाय विधये स्वभुजादवतारिता ।

तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे ।।34।।

अन्वय तेन सन्तानार्थाय विधये स्वभुजात् अवतारिता जगतः गुर्वी धूः सचिवेषु निचिक्षिपे।

अनुवाद पुत्र की प्राप्ति के निमित्त धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए राजा दिलीप ने अपनी भुजाओं से उतारा हुआ (प्रजापालन रूप) पृथ्वी का भारी बोझ मन्त्रियों के ऊपर रख दिया (उन्हें सौंप दिया)।

टिप्पणियां

सन्तानार्थाय सन्तानाय इति सन्तानार्थः, तस्मै, सन्तानार्थाय। सन्तानः अर्थः प्रयोजनं यस्य सः सन्तानार्थः तस्मै सन्तानार्थाय (मल्लिनाथ)।

विधये विधिः धार्मिक अनुष्ठान (के लिए), चतुर्थी विभक्ति एकवचन।

गुर्वी गुरु ङीप् (उ के अन्त होने वाले विशेषण में विकल्प से ङीप् आता है) 'गुरु' से निष्पन्न स्त्री प्रत्ययान्त विशेषण, भारी।

निचिक्षिपे नि उपसर्ग क्षिप् धातु कर्मणि लिट्, अन्य पुरुष एकवचन, (मन्त्रियों को) सौंप दिया, (उन पर) डाल दिया।

अवतारिता अव तृणिच् क्त टाप्, उतारा हुआ; 'धूः' (भार) का विशेषण है।